SHODH SAGAR®
Innovative Research Thoughts
ISSN: 2454-308X | Vol. 10 | Issue 4 | Oct - Dec 2024 | Peer Reviewed & Refereed

''राज्य लोक सेवा आयोग से चयनित अध्यापको की अभिवृति का अध्ययन ''

अजय कुमार दीक्षित, शोधार्थी
डॉ कमल कुमार चौहान, शोध निर्देशक
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
लार्ड विश्वविद्यालय अलवर–राजस्थान

सारांश :–

राजस्थान राज्य का प्रशासनिक अधिकारियों एवं बुद्विजीवीं वर्ग का चयन करने मे राजस्थान लोक सेवा आयोग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जो चयन करते समय कर्मचारी की मनोवति एवं उसकी अभिवृति का मापन करते हुऐ उसकी अभिक्षमता की जॉच करता है। आज में मेरे शोध में उन नव चयनित अध्यापकों का मानसिक स्तर की जॉच करूगां जिसके आधार पर बालक के मानसिक स्तर की जॉच कर उसकी क्षमता के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करने में महत्ती भूमिका निभा सके।

अध्यापक एक ऐसी नींव का पत्थर है जो संयमित ओर नैतिक मूल्यों से सराबोर समाज की कल्पना करने मे सहयोग कर सकता है ओर उन्नत विचारो के साथ सभ्य समाज की रचना कर सकते है।अभिवृत्ति का जन्म प्राय: चार साधनों से होता हुआ देखा गया है––प्रथम समन्वय द्वारा, द्वितीय आघात द्वारा, तृतीय भेद द्वारा तथा चतुर्थ स्वीकरण द्वारा। यह आवश्यक नहीं है कि ये यंत्र स्वतंत्र रूप से ही कार्य करेय ऐसा भी देखा गया है कि इनमें एक या दो कारण् भी मिलकर अभिवृति को जन्म देते हैं। इस दिशा में अमेरिका के दो मनोवैज्ञानिकों – जे. डेविस तथा आर. बी. ब्लेक ने विशेष रूप से अनुसंधान किया है। प्रयोगों द्वारा यह भी देखा गया है कि अभिवृति के निर्माण में माता पिता, समुदाय, शिक्षा प्रणाली, सिनेमा, संवेगात्मक परिस्थितियों तथा सूच्यता (सजेस्टिबिटी) का विशेष हाथ होता है। राज्य लोक सेवा आयोग अध्ययपको के चयन में शिक्षक अभिवृति का प्रयोग उनकी मनोदशा की जाच करने के लिए जब से गठन हुआ है तब से ही किया जा रहा है। राजस्थान राज्य का प्रशासनिक अधिकारियों एवं बुद्विजीवीं वर्ग का चयन करने मे राजस्थान लोक सेवा आयोग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जो चयन करते समय कर्मचारी की मनोवति एवं उसकी अभिवृति का मापन करते हुऐ उसकी अभिक्षमता की जॉच करता है।

अभिवृति का अर्थ:– अभिवृत्ति किसी घटना, व्यक्ति, आदर्श आदि से संबंधित पक्ष–विपक्ष दोनों है। इसी कारण अभिवृत्तियों में रुचि–अरुचि, अच्छा–बुरा, अनुकूल–प्रतिकूल आदि सभी प्रकार के संवेग शामिल होते हैं। व्यवहार की दिशा अभिवृत्ति द्वारा निर्धारित होती है अभिवृति को नापने का प्रश्न सदा से मनोवैज्ञानिकों के लिए कठिन रहा है, लेकिन आज के युग में इस दिशा में भी पर्याप्त कार्य हुआ है। एल. थर्स्टन ने इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है। उनके विचारों द्वारा अभिवृति को नापने को प्रयत्न किया गया है। उन्होंने "ओपीनियन स्केल" विधि को ही प्रधानता दी है। प्राक्षेपिक विधि (प्रोजेक्शन टेकनीक) आजकल विशेष रूप से प्रयोग में लाई जा रही है। ई.एस. बोगार उस ने अपने अनुसंधानों द्वारा 'सोशल डिस्टैन्स टेकनीक' के द्वारा व्यक्तियों के विचारों को नापने का प्रयत्न किया है। इस दिशा में अभी विशेष कार्य होने की आवश्यकता है। भारतीय मनोविज्ञान शालाएँ भी इस दिशा में कार्य कर रही हैं। जिसमे भारत की मनोविज्ञानशाला, इलाहाबाद, ने कुछ विधियों का भारतीय करण किया है जिनका प्रयोग भारतीय मनोविज्ञानवेताओं द्वारा किया गया ओर उन्ही के आधार पर राज्य सेवा आयोग के द्वारा शिक्षक भर्ती में शिक्षक की बच्चों के प्रति अभिवृति का अध्ययन का गहनता से अध्ययन कर उनकी समस्याओं का समाधान कर सके।

अभिवृत्तियों की प्रकृति एवं उनकी विशेषतायें :– अभिवृत्ति को व्यवहार से पूर्व की मनोदैहिक अवस्था या प्रवृत्ति के रूप में हमने समझा है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या इस प्रकार की अन्य अवस्थाओं या प्रवृत्तियों जैसे आदत, रूचियों, शीलगुण और मूल अभिप्रेरकों को भी अभिवृत्तियों का नाम दिया जाना चाहिये? उत्तर है, हाँ। अभिवृत्ति इन सभी विशेषताओं से अलग प्रवृत्ति है। जिनको समझाने के लिए हमें उनके पहले गुणों को समझना जरूरी होगा

जिसके आधार पर आवष्यक कार्यो को समझा जा सके। इनकी विभिन्न विषेषताओं को बारिकी से समझा जा सकता है। जो निम्नलिखित हैः–

1. अभिवृत्तियों में व्यक्ति–वस्तु सम्बन्ध पाया जाता है (Attitudes have a subject object relationship)- किसी भी विशेष वस्तु, व्यक्ति,समूह, संस्था, मूल्य अथवा मान्यता के प्रति बनी हुई अभिव्यक्ति–इन सभी के प्रति व्यक्ति का कैसा सम्बन्ध है यह स्पष्ट करती है

2. **अभिवृत्तियां अर्जित होती है (Attitudes are acquired or learned)-** कोई भी अभिवृत्ति जन्मजात नहीं होती, वातावरण में उपलब्ध अनुभवों के द्वारा अर्जित की जाती है। इस आधार पर अभिवृत्तियों को मूल अभिप्रेरणाओं से अलग किया जा सकता है। उदाहरण के लिये श्भूखश को ही लीजिये जो जन्मजात प्रवृत्ति है। इसे सीखा नहीं जाता जबकि किसी विशेष प्रकार के भोजन के प्रति हमारा झुकाव एक अर्जित प्रवृत्ति के नाते अभिवृत्ति का स्वरूप ले लेता है।

3. अभिवृत्तियों में अभिप्रेरणात्मक–प्रभावोत्पादक विशेषता पाई जाती है (Attitudes have motivational affective characteristics)- अभिवृत्तियों के विकास में किसी अभिप्रेरणा का हाथ होता है जबकि आदत आदि अन्य प्रवृतियों में यह आवश्यक नही। उदाहरण के लिये सीधे हाथ से लिखने की आदत को ही लें तो इसे किसी अभिप्रेरणात्मक प्रभाव से जुड़ा हुआ नहीं माना जा सकता। दूसरी ओर अपने परिवार, राष्ट्र, धर्म और अंन्य पवित्र एवं प्रतिष्ठित संस्थाओं के प्रति बनी हुई अभिवृत्तियों में कोई निश्चित प्रेरणात्मक प्रभाव पूरी तरह स्पष्ट हो सकता है।

4. अभिवृत्तियां तत्परता की अपेक्षाकृत स्थायी अवस्थायें हैं (Attitudes are relatively enduring states of readiness) - किसी वस्तु या प्रत्यि के प्रति व्यक्ति की स्वाभाविक तत्परता जिसे अभिवृत्ति के नाम से जाना जाता है, उसका स्वरूप बहुत कुछ स्थायी होता है। मूल अभिप्रेरणाओं के स्वरूप में इतना स्थायित्व नहीं होता। भूख और कामोत्तेजना (Sexual Tension) सम्बन्धी तत्परता आवश्यकता पूर्ति के साथ समाप्त हो जाती है जबकि पत्नी के प्रति आकर्षण में ढली अभिवृत्ति कामेच्छा की संतुष्टि के बाद भी बनी रहती है।

5. अभिवृत्तियों का प्रसार–क्षेत्र पूर्णतः सकारात्मक से पूर्णतः नकारात्मक तक फैला होता है (Attitudes range from strongly positive to strongly negative) – अभिवृत्तियों में दिशा और परिणाम दोनों ही पाये जाते है। जब कोई व्यक्ति वस्तु या विचार के प्रति आकर्षित होकर उसे पाना चाहता है तो उसकी अभिवृत्ति की दिशा सकारात्मक मानी जाती है और अगर वह उससे विकसित हो कर दूर भागना चाहे तो अभिवृत्ति की दिशा नकारात्मक कहलाती है। दिशा के साथ साथ अभिवृत्ति में भावनाओं की तीव्रता भी जुड़ी रहती है जिससे यह बोध होता है कि प्रवृत्ति कितनी अधिक मात्रा में सकारात्मक है या नकारात्मक।

अतः इस प्रकार से अभिवर्ति बालक की मनोदशा को समझने के लिए आवश्यक भूमिका में रहती है जिसके आधार पर आवश्यक कार्यो को करने की भूख की जानकारी प्राप्त कर उसकी मनोदशा को समझा गया है।

अभिवृति को समझने के लिए प्रमुख शिक्षण विधियां –

अध्यापको के चयन में शिक्षण विधियों को समझने की आवश्यकता क्यों महसुस हुई–

1. विद्यार्थियों को उद्देश्यपूर्ण सिखाने के लिए ओर उनमें नैतिक विकास को बल देने के लिए प्रमुख शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाना महत्वपूर्ण रहा है।

2. छात्रों में उन कुशलता का विकास करना जिनके आधार पर प्रजातान्त्रिक गुणों का

विकास कर सके इस प्रकार की अभिक्षमता अध्यापको में होना आवश्यक है जिसके लिए चयन में अभिक्षमता के ज्ञान की जॉच करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

3. छात्रों को विषय के प्रति रूचि उत्पन्न करने की क्षमता रखनें की योग्यता का आकलंन किया जाना भी आवश्यक है।

4. छात्रों के ज्ञान में अभिवृद्वि करने एवं उनको चिन्तन के लिए प्रोत्साहित करने के लिए भी अभिवृति की जानकारी होना आवश्यक है।

5. छात्रों की विषय के प्रति रूचि पैदा करना ओर सामाजिक अभिवृति के विकास में सहयोग करना भी इसका एक उद्देश्य होता है।

अभिरूचियां ओर अभिक्षमताः– अभिरुचियां उन चीजों को दर्शाती हैं जो किसी व्यक्ति उसके कौशल की परवाह किए बिना करना पसंद करती हैं। वे आदतों और गतिविधियों के विकास को एक दिशा प्रदान करते हैं। लेकिन कौशल तभी विकसित होगा जब अभिरुचि और आवश्यक प्रतिभा (अभिक्षमता) दोनों व्यक्ति में मौजूद हों।

अभिरुचि किसी व्यक्ति को किसी विशेष चीज के लिए पसंद करने के लिए संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए, मुझे संगीत पसंद हो सकता है, लेकिन मेरे पास इसके लिए अभिक्षमता नहीं हो सकती है। यहां, जो अभिरुचि मेरा है वह शायद मेरी आंतरिक क्षमता का परिणाम नहीं हो, लेकिन कुछ अन्य प्रभावों जैसे कि सहकर्मी दबाव, या स्कूल की आवश्यकता या यहां तक कि माता.पिता की इच्छा के कारण भी हो सकती है। इस प्रकार, अभिरुचि अस्थायी हैं, स्थिर नहीं। वे समय के साथ बदल सकते हैं। यहां तक कि अगर किसी विशेष चीज के लिए अभिक्षमता है, अगर किसी को इसमें अभिरुचि नहीं है, तो वह इसके लिए आवश्यक प्रयास और समय नहीं डालेगा। उदाहरण के लिए, आपके पास नाटक और रंगमंच के लिए अद्भुत अभिक्षमता हो सकती है, लेकिन इसमें पर्याप्त अभिरुचि के बिना, आप कौशल विकसित करने के लिए आवश्यक समय और प्रयास समर्पित नहीं करेंगे। इसी तरह, पर्याप्त अभिक्षमता के अभाव में, भले ही व्यक्ति के पास सबसे ज्यादा अभिरुचि हो, वह केवल एक सीमित सीमा तक ही कौशल प्राप्त कर पाएगा। इसलिए किसी विशेष 133 क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए अभिक्षमता और अभिरुचि दोनों की आवश्यकता होती है।

अभिक्षमता और अभिरुचि के बीच का अंतर :–

1. अभिक्षमता से तात्पर्य है कि व्यक्ति क्या कर सकता है। हालांकि, व्यक्ति को इसमें अभिरुचि नहीं हो सकती है। अभिरुचियां उन चीजों को दर्शाती हैं जिन्हें कोई करना पसंद करता है। क्षमता होने से इसमें किसी की अभिरुचि भी हो इसकी गारंटी नहीं है।

2. अभिक्षमता समय के साथ नहीं बदलते हैं। वे मुख्य रूप से जन्मजात क्षमताएं हैं। व्यक्ति के ज्ञान और अनुभव में परिवर्तन के साथ अभिरुचियां समय के साथ बदल सकती हैं। अभिरुचियों का अधिग्रहण किया जाता है, इसलिए वे माता.पिता, साथियों के समूह, स्कूल और मीडिया प्रभावों सहित कई कारकों से प्रभावित होते हैं।

3. इस प्रकार, यदि किसी व्यक्ति में किसी विशेष चीज/गतिविधि के लिए क्षमता (अभिक्षमता) है, और उसमें अभिरुचि भी है, तो गतिविधि के लिए आवश्यक कौशल हासिल करना आसान हो जाता है।

अभिक्षमता परीक्षण का प्रयोगः–

1. कैरियर काउंसलिंग अभिक्षमता परीक्षण का उपयोग करियर काउंसलर्स द्वारा ज्यादातर किया जाता है ताकि छात्रों को पाठयक्रम या व्यवसाय का उचित चुनाव करने में मदद मिल सके। ऐसे मामलों में, काउंसलर अभिक्षमता परीक्षण बैटरी का संचालन करता है जो विभिन्न प्रकार की योग्यता को मापने वाले परीक्षणों का एक संयोजन है।

2.नैदानिक (clinical) सेवा अभिक्षमता परीक्षण से प्राप्त जानकारी का उपयोग किसी कमतर उपलब्धि, कुसमायोजक छात्र के बारे में नैदानिक निर्णय लेने के लिए भी किया जा सकता है चाहे उसमे अभिप्रेरक या अन्य आचरण समस्या हो या मात्र सीखने की क्षमता की कमी है ।

3. कार्मिक चयन नियोक्ता कर्मचारियों का चयन करने के लिए व्यावसायिक योग्यता परीक्षणों का उपयोग करते हैं। आमतौर पर, वे विशेष अभिक्षमता परीक्षणों का उपयोग करते हैं जो नौकरी के लिए आवश्यक विशेष कौशल को मापते हैं। ये परीक्षण विशेष कार्य में सफलता की भविष्यवाणी करते हैं।

4. नौकरी में प्रशिक्षण पर संगठन, प्रशिक्षण और आवश्यकता विश्लेषण के लिए अभिक्षमता परीक्षण के अंकों पर निर्भर करते हैं, अर्थात्, व्यक्तिगत कर्मचारियों की ताकत और कमजोरियों की खोज करते हैं, ताकि उन्हें नौकरी प्रशिक्षण जरूरत के आधार पर प्रदान किया जा सके।

5. प्रवेश के लिए स्क्रीनिंग अधिकांश शैक्षणिक संस्थान विभिन्न पाठयक्रमों में प्रवेश के लिए उम्मीदवारों का चयन अभिक्षमता परीक्षणों के आधार पर करते हैं, जैसे, शिक्षा के पाठयक्रम (बी.एड) और प्रबंधन के पाठयक्रम।

अभिक्षमता के परीक्षण करने का उपयोगः–

Differential Aptitude test (DAT) डिफरेंशियल एप्टीटयूड टेस्ट (डीएटी) बेनेट, सीषोर और वेसमैन (1947, 1982, 1984) द्वारा विकसित किया गया है। यह सबसे व्यापक रूप से और आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले अभिक्षमता परीक्षण माला (इंजजमतल) में से एक है। 1947 में पहली बार प्रकाशित, परीक्षण अब इसके पांचवें संस्करण (1992) में उपलब्ध है। बैटरी के पांचवें संस्करण को ग्रेड सात से बारह के छात्रों की शैक्षिक और कैरियर परामर्श में उपयोग के लिए निर्मित किया गया है, यह दो स्तरों पर संगठित है:

1- पहला सात से नौ ग्रेड के छात्रों के लिए

2. दूसरा दस से बारह ग्रेड के छात्रों के लिए।

DAT में आठ स्वतंत्र परीक्षण होते हैं :

1. मौखिक तर्क Verbal Reasoning - VR
2. संख्यात्मक तर्क Numerical Reasoning - NR
3. सार तर्क Abstract Reasoning - AR
4. प्रत्यक्षणात्मक (लिपिकीय) गति और सटीकता Perceptual (Clerical) Speed and Accuracy - PSA
5. ;ांत्रिक तर्क Mechanical Rreasoning - MR
6. अंतराल संबंधौं Space Relations - SR
7. वर्तनी Spelling
8. भाषा प्रयोग Language Usage - LU

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. ऑलपोर्ट जी.डब्लू (1935) :–हैड बुक ऑफ सोषल साइकोलॉजी पृष्ट स. 175–210
2. कुप्पुस्वामी,बी. (1975) सामाजिक मनोविज्ञान के मूल तत्व नई दिल्ली विकास प्रकाषन प्रेस पृ.स. 109–110
3. मुछाल,एम.कु. ओर चन्द एस.(2015)– प्राथमिक स्तर पर कार्यरत बीएड. प्रषिक्षित अध्यापको की षिक्षण अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन पृ.स. 164–168.

अजय कुमार दीक्षित, शोधार्थी
डॉ कमल कुमार चौहान, शोध निर्देशक
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
लार्ड विश्वविद्यालय अलवर–राजस्थान